कुलाधिपति सन्देश

दिव्यांगजन, समाज एवं राष्ट्र के लिए विशिष्ट प्रकार से उपयोगी है। वे विगत कलायुक्त नहीं अपितु विशिष्ट कला एवं दिव्यता से युक्त हैं। जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय की स्थापना इसी विचार अधिष्ठान पर की गई है। दिव्यांगजन में विभिन्न प्रकार की कलाओं का विकास करना, उन्हें वर्तमान चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाना तथा एक सफल एवं जागरुक नागरिक के रूप में समाज एवं राष्ट्र के समक्ष प्रस्तुत करना, यही विष्वविद्यालय का हेतु है। भारत का यह एक अभिनव प्रयोग है। पारंपरिक विश्वविद्यालयों से भिन्न एक विशेष लक्ष्य को लेकर स्थापित यह विश्वविद्यालय शनैः-शनैः प्रगति पथ पर अग्रसर हो रहा है। अभाव दिव्यांगजनों के मार्ग में बाधा न बन पाये, ऐसा विश्वविद्यालय का विनम्र प्रयास है। विश्वविद्यालय इस नवीन सत्र से कुछ विशेष पाठ्यक्रम प्रारम्भ कर रहा है, यह श्लाघनीय है। ये नवीन पाठ्यक्रम-दिव्यांगजन को, समाज एवं राष्ट्र के लिए-उपयोगी बना सकेंगे, यह मुझे विश्वास है। आगामी सत्र में प्रवेश लेनें वाले विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए, मेरा मंगलाशासन है।

इति मंगलमाशास्ते !

श्री राघवीयो जगद्गुरु रामभद्राचार्य
जीवनपर्यन्त कुलाधिपति
ज0रा0दि0रा0 विश्वविद्यालय